तर्ज- अगर दिलबर की रूसवाई हमें
चलो नासूत से निजघर धनी,अब न रहा जाये
अर्श की मस्तियों में आओ फिर,मदहोश हो जायें
1- तमन्ना है यहीं दिल में,उठें हम मूलमिलावे में
हम आशिक हैं इन चरणों के,हमारी जान हैं इनमें
नज़र से जब मिले नज़रें तो फिर,दीदार हो जाए
2- है दूजी भोम भुलवनी,होतीं गुम भूलभुलैया में
तीसरी भोम में पड़साल,है सुख सिनगार सजने में
भरें जब मांग श्यामा की धनी,खुद हमरी भी भर जाये
3- अर्श तब झूम जाता है,नाचे जब चौथी में नवरंग
पांचवीं में शयन करते,छठी सुखपाल छज्जे संग
दो भोमों में हिडोंले झूल कर,नवमी में अब आयें
नजारे जो अर्श के सब धनी,हमको हैं दिखलायें
4- पूनम की रात है आई,पिया संग चलें आकाशी पे
खिली हैं चांद की किरणें,पिया के इक इशारे पे
हवाओं में सुगन्ध शीतल,पिया को मस्त कर जाये
5- करें अठखेलियां रूहें,सभी संग राजस्यामा के
खेलें कई खेल विध विध के,बहुत लज्जत है इस पल में
फुहारों की बौछारें भी,पिया अंग चूमना चाहें
समां कितना सुहाना है,यहां अब वक्त थम जाये
6- दे शोभा पश्चिम सिंहासन,विराजें सज के श्यामाश्याम
घेर कर बैठी हैं रूहें,नज़र से पीती हर पल जाम
कभी हंस कर कभी मिल कर,पिया का प्यार हम पायें

Nijanand App